INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली

असतो मा सद्गमय

CTET

(CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST

जूनियर लेवल (कला वर्ग)

HANDWRITTEN NOTES

भाग-5 सामाजिक अध्ययन

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

CTET

जूनियर स्तर (कला वर्ग)

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 5 सामान्य अध्ययन (SST)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (जूनियर स्तर) (कला वर्ग)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* **CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION (CBSE)** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (जूनियर स्तर) (कला वर्ग)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/cs2iro

Online Order करें - https://rb.gy/gejnn0

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	हड़प्पा सभ्यता	1
2.	वैदिक काल	6
3.	धार्मिक आन्दोलन	12
4.	प्राचीन भारत के राजवंश	17
	मध्यकालीन भारत	
5.	अरब आक्रमण	40
6.	सल्तनत काल	42
7.	मुगल काल	56
8.	भक्ति तथा सूफी आन्दोलन	60
	आधुनिक भारत	
9.	यूरोपियन कंपनियों का आगमन	65
10.	भारत में गवर्नर जनरल वायसराय एवं उनके कार्य	80
11.	राष्ट्रवाद का उदय	86
12.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	109
13.	एकीकरण और पुनर्गठन	133
	भारतीय कला एवं संस्कृति	
1.	भारतीय चित्रकला	137
2.	भारतीय नृत्य कलाएं	139
3.	मुगलकालीन कला एवं वास्तु	141
	भारत का भूगोल	
1.	आकार एवं विस्तार	145
2.	भारत का भौतिक विभाजन	148
3.	भारत का अपवाह तंत्र नदियाँ एवं झीलें	172

4.	मृदा	184
5.	भारत की जलवायु	186
6.	भारत में वन एवं वनस्पति	195
7.	भारत में कृषि एवं सिंचाई	201
8.	भारत में प्रमुख खनिज संसाधन	207
9.	ऊर्जा संसाधन	212
10.	भारत के प्रमुख उद्योग	219
11.	परिवहन एवं संचार	229
12.	भारत की जनगणना	238
	विश्व भूगोल	
1.	ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल	241
2.	अक्षांश एवं देशांतर	258
3.	पृथ्वी की गतियाँ	259
4.	वायु का दाब एवं पवनें	261
5.	चक्रवात	263
6.	सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण	264
7.	पृथ्वी के प्रमुख जलवायु कटिबंध	265
	भारतीय राजव्यवस्था	
1.	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	266
2.	भारतीय संविधान की विशेषताएं	274
3.	उद्देशिका (प्रस्तावना)	277
4.	संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र	280
5.	नागरिकता	282
6.	मौलिक अधिकार	284

7.	राज्य के नीति के निदेशक तत्व	293
8.	मूल कर्तव्य	298
9.	राष्ट्रपति	299
10.	उपराष्ट्रपति	310
11.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	312
12.	भारतीय संसद	318
13.	उच्चतम न्यायालय	330
14.	संविधान संशोधन	336
15.	केन्द्र – राज्य संबंध	339
16.	विभिन्न आयोग	342
17.	पंचायती राज	362
18.	उपभोक्ता संरक्षण	370
	शिक्षाशास्त्र	
1.	सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति	374
2.	कक्षा – कक्ष की प्रक्रियाएं क्रियाकलाप एवं विमर्श	376
3.	सामाजिक अध्ययन के अध्यापन की समस्याएं	381
4.	समालोचनात्मक चिंतन की विकास	382
5.	पृच्छा / अनुभाविक साक्ष्य	384

अध्याय – 1

हड़प्पा सभ्यता

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

❖ **सिन्धु घाटी सभ्यता**

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

  इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता ।
- मेलूहा सभ्यता ।
- कांस्यकालीन सभ्यता ।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।
- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

  कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
  ह्विलर - 2500-1700 ई.पू.
  मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

मैके → मार्शल / नदी में बाढ़ के कारण / एस.आर.राव

व्हीलर → गार्डन चाइल्ड / बाह्य आक्रमण / पिगट

जलवायु परिवर्तन → आरेल स्टाइन / अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार →

- इस सभ्यता का विस्तार **अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

अफगानिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

शोर्तुघई और मुंडिगक अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के एकमात्र स्थल हैं।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब –** कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
चिनाब नदी के किनारे
सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्वी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
फैलाव- त्रिभुजाकार
क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

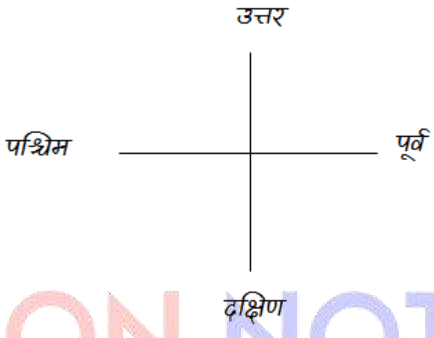

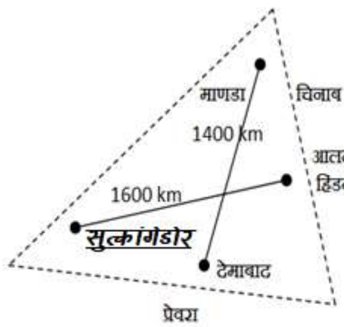

स्थल	नदियों के नाम	उत्खन्न का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)

INFUSION NOTES WHEN ONLY ... L DO

रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंड़न	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धोंलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - धौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं

- **हड़प्पा**

  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

  खोज- वर्ष 1921 में

  उत्खनन -

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- ***पिगट ने*** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।

  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

मोहनजोदड़ों

- ***सिन्धु नदी*** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी।
- **उत्खनन** - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं ।
- ***वस्त्र निर्माण*** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।

- इस काल में बनवाये गये स्तूपों में नागार्जुनकोंडा का स्तूप सबसे प्रसिद्ध है। उसका गुम्बद आधार के आर-पार 162 फीट था और ऊंचाई 100 फीट थी।
- इसी काल में कई हिन्दू मंदिर बने जो प्रायः ईंटों के होते थे।

मूर्तिकला

- सातवाहन युग में उनके देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाई गयी अमरावती स्थित स्तूप मूर्तियों से भरा पड़ा है।
- इसमें अधिकांश मूर्तियों द्वारा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित दृश्यों को प्रदर्शित किया गया है।
- नागार्जुनकोंडा में भी कुछ अवशेष प्राप्त हुए हैं। जिनसे मूर्तिकला की प्रगति के प्रमाण मिलते है।
- नानाघाट में उत्कीर्ण मूर्तियाँ एक ही श्रेणी की है। जो यद्यपि भग्न हैं, किन्तु वे इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उनमें शातकर्णी के वंश के सदस्यों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।
- इनके नाम भी उत्कीर्ण है। कोण्ठानी में एक मूर्ति प्राप्त होती है, जिस पर लघु अभिलेख भी प्राप्त होता है।
- इस काल की कुछ ऐसी मूर्तियाँ नागार्जुनकोंडा के विजयपुरी नामक स्थान से मिलती हैं जिन पर गांधार कला शैली का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

भाषा और साहित्य

- सातवाहन काल में प्राकृत भाषा और साहित्य में भी प्रगति हुई। इस काल में **राजकीय भाषा प्राकृत थी** और **प्रचलित लिपि ब्राह्मी**।
- उन्होंने अपने सभी अभिलेख, प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में ही लिखवाये।
- हाल नामक सातवाहन राजा प्राकृत भाषा का प्रसिद्ध कवि था।
- सम्भवतः उसी ने श्रृंगार रस की गाथा सप्तशती की रचना की थी। इसमें 700 पद्य थे जो प्राकृत में रचे गये थे। सम्भवतः गुणाढ्य की वृहतकथा भी सातवाहन के काल में लिखी गयी।
- तमिल साहित्य में भी कुछ रचनाएं इसी युग में शुरू की थी। इसी काल में **संस्कृत व्याकरण की पुस्तक "कातंत्र" संघवर्मन नामक विद्वान ने लिखा।**
- सातवाहन वंश का पहला महत्त्वपूर्ण शासक शातकर्णी प्रथम था। जिसने **दक्षिणाधिपति** की उपाधि धारण की। इसने पहली शताब्दी ई.पूर्व में ब्राह्मणों एवं बौद्धों को भूमि अनुदान में दी जो **भूमिदान का पहला अभिलेखीय साक्ष्य है**।

शातकर्णी प्रथम के उत्तराधिकारी 'हाल' ने प्राकृत भाषा में गाथा सप्तशती नामक पुस्तक की रचना की है। जिसमे उसकी प्रेम गाथाओं का वर्णन है

गुप्त वंश

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था।
- मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही।
- कुषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई **राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।**
- गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था।

गुप्त वंश की उत्पत्ति

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने पूना अभिलेख में अपने वंश को स्पष्टतः धारण गोत्रीय बताया है। अग्रवालों के 18 गोत्र में से एक गोत्र धारण है।
- गुप्त वैश्यों की उपाधि है, आज भी धार्मिक कर्म व संकल्प करते हुए वैश्य पुरोहित नाम व गोत्र के साथ गुप्त उपनाम का उल्लेख करते हैं।
- गुप्त शासकों के नाम श्री, चन्द्र, समुद्र, स्कन्द आदि थे। जबकि गुप्त उनका उपनाम था, जो की उनके वर्ण व जाति को उद्घोषित करता है।
- गुप्त उपनाम केवल और केवल वैश्य समुदाय के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है। **इतिहास में व पुराणों में गुप्त सम्राटों को वैश्य बताया गया है।**
- गुप्त वंश के शासक अग्रवाल थे। प्रख्यात इतिहासकार राहुल संस्क्रतायन ने भी गुप्त वंश को अग्रवाल वैश्य बताया है।
- अग्रवालों की कुलदेवी माता लक्ष्मी है। गुप्त सम्राटों की कुलदेवी भी माता लक्ष्मी है। अग्रवाल मुख्यतः वैष्णव होते हैं और शुद्ध शाकाहारी भी गुप्त वंश के शासक भी वैष्णव और शाकाहारी थे।
- **गुप्त वंश के समय में भारत सोने की चिड़िया कहलाया था।** एक विशुद्ध वैश्य शासक ही व्यापार को बढ़ावा दे सकता है।

गुप्त वंश के शासक

घटोत्कच (280-320 ई.)

- गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र घटोत्कच राजगद्दी पर बैठा।

- इसने 280 ई. से 320 ई. तक शासन किया। इसने महाराजा की उपाधि धारण की थी।
- उत्पन्न होते समय उसके सिर पर केश (उत्कच) न होने के कारण उसका नाम घटोत्कच रखा गया।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- अपने पिता घटोत्कच के बाद सन् 319 / 320 ई. में चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना। चन्द्रगुप्त, गुप्त वंशावली में पहला स्वतंत्र शासक था।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी । बाद में लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- यहीं से उसका साम्राज्य विस्तार हुआ। उसने सफलता पूर्वक लगभग पंद्रह वर्ष (320 ई. से 335 ई. तक) तक शासन किया।
- चन्द्रगुप्त ने एक गुप्त संवत (319-320 ई.) चलाया कदाचित इसी तिथि को चन्द्रगुप्त प्रथम का राज्याभिषेक हुआ था ।

समुद्रगुप्त (335 – 375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद 335 ई. में उसका तथा कुमारदेवी का पुत्र समुद्रगुप्त राजगद्दी पर बैठा।
- सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास में महानतम शासकों के रूप में वह नामित किया जाता है। इन्हें **पराक्रमांक** कहा गया है।
- **समुद्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता है।** इस साम्राज्य की **राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- समुद्रगुप्त ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक असाधारण सैनिक योग्यता वाला महान विजित सम्राट था । **विन्सेट स्मिथ ने इन्हें नेपोलियन की उपाधि दी।**
- उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान दक्षिण की तरफ **(दक्षिणापथ)** था । इसमें उसकी बारह विजयों का उल्लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त एक अच्छा राजा होने के अतिरिक्त एक अच्छा कवि तथा संगीतज्ञ भी था। उसे कला मर्मज्ञ भी माना जाता है।
- उसका देहान्त 375 ई. में हुआ जिसके बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय राजा बना। यह उच्चकोटि का विद्वान तथा विद्या का उदार संरक्षक था।
- उसे कविराज भी कहा गया है। वह महान संगीतज्ञ था जिसे वीणा वादन का शौक था।
- इसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को अपना मन्त्री नियुक्त किया था।
- हरिषेण, समुद्रगुप्त का मंत्री एवं दरबारी कवि था। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार के संबंध में सटीक जानकारी प्राप्त होती है।
- **काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चन्द्रप्रकाश' मिलता है।**
- उसने उदार, दानशील, असहायी तथा अनाथों को अपना आश्रय दिया।
- वैदिक धर्म के अनुसार इन्हें धर्म व प्राचीर बन्ध यानी धर्म की प्राचीर कहा गया है।
- **समुद्रगुप्त का साम्राज्य** - समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी से पश्चिम में पूर्वी मालवा तक विस्तृत था। कश्मीर, पश्चिमी पंजाब, पश्चिमी राजस्थान, सिन्ध तथा गुजरात को छोड़कर समस्त उत्तर भारत इसमें सम्मिलित थे। दक्षिणापथ के शासक तथा पश्चिमोत्तर भारत की विदेशी शक्तियाँ उसकी अधीनता स्वीकार करती थीं ।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375-415)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई. में सिंहासन पर आसीन हुआ। वह समुद्रगुप्त की प्रधान महिषी दत्तदेवी से हुआ था।
- वह विक्रमादित्य के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। उसने 375 से 415 ई. तक (40 वर्ष) शासन किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों पर अपनी विजय हासिल की जिसके बाद गुप्त साम्राज्य एक शक्तिशाली राज्य बन गया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में क्षेत्रीय तथा सांस्कृतिक विस्तार हुआ।
- हालांकि चन्द्रगुप्त द्वितीय का अन्य नाम देव, देवगुप्त, देवराज, देवश्री आदि हैं। उसने विक्रमांक, विक्रमादित्य, परम भागवत आदि उपाधियाँ धारण की।
- उसने नागवंश, वाकाटक और कदम्ब राजवंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नाग राजकुमारी कुबेर नागा के साथ विवाह किया जिससे एक कन्या प्रभावती गुप्त पैदा हुई।
- वाकाटकों का सहयोग पाने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय के साथ कर दिया।
- उसने प्रभावती गुप्त के सहयोग से गुजरात और काठियावाड़ की विजय प्राप्त की।
- वाकाटकों और गुप्तों की सम्मिलित शक्ति से शकों का उन्मूलन किया।
- **कदम्ब राजवंश का शासन कुंतल (कर्नाटक) में था।** चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब वंश में हुआ।
- शक उस समय गुजरात तथा मालवा के प्रदेशों पर राज कर रहे थे। शकों पर विजय के बाद उसका साम्राज्य न

वत्सभट्टि

इनकी काव्य शैली के विषय में जानकारी मालव संवत् के '**मंदसौर के स्तम्भ**' लेख से मिलती है। इस लेख में कुल ४५ श्लोक हैं, जिनमें पहले तीन श्लोकों में सूर्य स्तुति की गई है।

वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल ९ श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है`।

कालिदास

- संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य।
- कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक '**अभिज्ञान शाकुन्तलम्**' है। इसके अतिरिक्त उन्होंने **मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।**

भारवि

'**किरातार्जुनीयम्**' **महाभारत** के वनपर्व पर आधारित है इसमें कुल 18 सर्ग है।

भट्टि

इनके द्वारा रचित '**भट्टिकाव्य**' को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	**नाटककार**	**नाटक का विषय**
मालविकाग्निमित्रम्	**कालिदास**	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	**कालिदास**	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**कालिदास**	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वैश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	**भास**	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भारत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

- विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न भिन्न संस्करण निकल चुके हैं।
- **पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है।**
- 16 वीं शताब्दी के अंत तक इस ग्रंथ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेजी भाषाओं में किया जा चुका था।

भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत

रामानुज (12 वीं. शताब्दी)

- रामानुज 12 वीं शताब्दी के महान संत थे । भक्ति आंदोलन के प्रारंभिक प्रतिपादक महान वैष्णव गुरु रामानुज थे । उनका जन्म तमिलनाडु राज्य में पेरंबदूर में हुआ था । वे सगुण ईश्वर में विश्वास करते थे।
- रामानुज ने मनुष्य की समानता पर बल दिया और **जाति व्यवस्था की भर्त्सना की। रामानुज के क्रिया कलाप का मुख्य केन्द्र काँची और श्रीरंगपट्टम था। किन्तु इनके उपदेशों के प्रति चोल प्रशासन के विरोध के कारण यह स्थान छोड़ना पड़ा।**
- रामानुज ने विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया । भक्ति आंदोलन के दूसरे नायक रामानुज के समकालीन निम्बार्क थे । वे द्वैतवाद दर्शन में विश्वास करते थे तथा ईश्वर के प्रति समर्पण पर बल देते थे।

विशिष्टा द्वैत दर्शन

- रामानुजाचार्य के दर्शन में परम सता के संबंध में तीन स्तर माने गये हैं- ब्रह्म, चित् और अचित्।
- वस्तुतः **ये ब्रह्म, चित्, अचित् ईश्वर से पृथक नहीं हैं बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म के ही दो स्वरूप हैं एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं। यही रामनुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत का सिद्धांत हैं।**

माधवाचार्य (1199 – 1278 ई.)

- माधवाचार्य ने शंकर और रामानुज दोनों के मतों का विरोध किया । **माधवाचार्य का विश्वास द्वैतवाद में था और वे आत्मा व परमात्मा को पृथक-2 मानते थे।** वे लक्ष्मी नारायण के उपासक थे ।

रामानंद (1299 – 1411 ई.)

- रामानंद उत्तरी भारत के पहले महान भक्त संत थे । वे रामानुज के शिष्य थे । **रामानंद ने दक्षिण और उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन के बीच सेतु का काम किया** अर्थात् भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लाये। उनका जन्म इलाहाबाद वाराणसी में हुआ था। उन्होंने विष्णु के स्थान पर राम की भक्ति आरंभ की।
- **उन्होंने अपने उपदेश संस्कृत के स्थान पर हिन्दी में दिये जिससे यह आंदोलन लोकप्रिय हुआ और हिन्दी साहित्य का निर्माण आरंभ हुआ।**
- रामानंद ने चारों वर्गों को भक्ति का उपदेश दिया। उनके सिद्धांत के आधार पर जाति प्रथा का कोई विरोध नहीं किया किन्तु उनका व्यावहारिक जीवन जाति समानता में विश्वास करने का था।
- रामानंद-के 12 शिष्य थे- उनमें कई जातियों के लोग थे, जैसे – रविदास (रैदास) चमार, कबीर जुलाहा, धन्ना जाट (किसान), सेन नाई, सधना कसाई, पीपा राजपूत आदि।
- **इनके 12 शिष्यों में दो स्त्रियाँ भी थी पद्मावती एवं सुरसरी थी।**
- वास्तव में मध्ययुग का धार्मिक आंदोलन रामानंद से आरंभ हुआ।

कबीर (1440-1510ई.)

- **कबीर सिकन्दर लोदी के समकालीन थे ।** उन्होंने अपने गुरु रामानंद के सामाजिक दर्शन को सुनिश्चित रूप दिया । **वे हिन्दू मुस्लिम एकता के हिमायती थे। कबीर के ईश्वर निराकार और सर्वगुण थे।**
- उन्होंने जात-पात, मूर्ति पूजा तथा अवतार सिद्धांत को अस्वीकार किया। **कबीर की शिक्षाएँ बीजक में संग्रहीत हैं। उनके अनुयायियों को कबीरपंथी कहा जाता था।** निर्गुण भक्तिधारा में कबीर पहले संत थे जो संत होकर भी अंत तक गृहस्थ बने रहे। वे साम्यवादी विचारधारा के थे।
- **जो लोग तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के तीव्र आलोचक थे और हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षपाती थे उनमें से कबीर और नानक का योगदान सबसे अधिक है।**

भक्ति आंदोलन में कबीर का योगदान

- कबीर 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और संत थे । वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। उनका लेखन सिक्खों के ग्रंथ में भी मिल जाता है ।
- वे हिन्दू धर्म व इस्लाम के आलोचक थे । उनके जीवन काल के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें अपने विचार के लिए धमकी दी थी ।
- कबीर पंथ नामक धार्मिक सम्प्रदाय इनकी शिक्षाओं के अनुयायी हैं । कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है।
- कबीर ने काशी के पास मगहर में देह त्याग दी। ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया था। हिन्दू कहते थे कि उनका अंतिम संस्कार हिन्दू रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे कि मुस्लिम रीति से।
- इसी विवाद के चलते जब उनके शव पर से चादर हट गई, तब लोगों ने वहाँ पर फूलों का ढ़ेर पड़ा देखा। बाद में वहाँ से आधे फूल हिन्दुओं ने ले लिए और आधे मुसलमानों ने।
- मुसलमानों ने मुस्लिम रीति से और हिंदुओं ने हिंदू रीति से उन फूलों का अंतिम संस्कार किया। **मगहर में कबीर की समाधि है ।** जन्म की भांति इनकी मृत्यु तिथि एवं घटना को लेकर भी मतभेद हैं किन्तु अधिकतर विद्वान् उनकी मृत्यु संवत 1575 विक्रमी (सन 1518 ई.) मानते हैं, लेकिन बाद के कुछ इतिहासकार उनकी मृत्यु 1448 को मानते हैं।

अध्याय – 12

स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण
उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गाँधीवादी समाजवादी

राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे- रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेड़ियों को तोड़ डाला"।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे -स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की । इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

और इसे हम ले कर रहेंगे।" इस तरह उग्रवादियों ने अपना लक्ष्य "स्वराज" घोषित किया।

- तिलक ने उदारवादी राजनीति की आलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस का अधिवेशन तीन दिवसीय छुट्टियों का मनोरंजन है। यदि हम वर्ष में एक बार मेंढ़क की तरह बोलेंगे तो हमे कुछ भी हासिल नहीं होगा।
- उग्रवादियों ने अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी पर बल दिया। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया।
- **उग्रवादियों ने ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति अपनायी। जिसके अंतर्गत धरना प्रदर्शन, बहिष्कार, जन एवं जेल भरो जैसे कार्यक्रम शामिल थे।**
- उग्रवादी नेता प्रार्थना पत्र, स्मरण पत्र जैसे साधनों में विश्वास नहीं करते थे और ऐसा करने वाले उदारवादी राजनीति को राजनीतिक भिक्षावृति की संज्ञा देते थे। दरअसल उग्रवादी नेता नवीन राजनीतिक साधनों जैसे - हड़ताल, बहिष्कार, जन आधारित कार्यक्रमों के प्रयोग पर बल देते थे ।

मूल्यांकन / योगदान :-

- उग्रवादी आंदोलन ने जनशक्ति पर बल दिया और राष्ट्रीय आंदोलन को आम जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया।
- उग्रवादियों ने राजनीतिक संघर्ष की नवीन पद्धतियों को लोकप्रिय बनाया। वस्तुतसंघर्ष की पद्धतियों में हड़ताल, बहिष्कार स्वदेशी पर बल जैसे विचारों को अपनाकर उसे लोकप्रिय बनाया।

सीमाएँ :-

- **उग्रवादी आंदोलन के नेताओं ने धार्मिक प्रतीकों पर अत्यधिक बल दिया ।** जैसे -तिलक ने शिवाजी महोत्सव एवंगणेश महोत्सव पर बल दिया। अतः धार्मिक प्रतीकों पर बल देने से साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला।
- **उग्रवादियों ने उदारवादी नेताओं से वैचारिक मतभेद इतना बढ़ा लिया कि 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन भी हो गया।** इससे राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर हुआ और ब्रिटिश सरकार को दमन करने का अवसर मिला।

बंगाल विभाजन (1905)

- कर्जन ने बंगाल के दो हिस्से कर दिए। एक पूर्वी बंगाल जिसमे ढाका, राजशाही, चटगांव जैसे क्षेत्र शामिल थे जिसकी राजधानी ढाका थी। दूसरा पश्चिम बंगाल, जिसमें बंगाल का पश्चिमी हिस्सा, बिहार और उड़ीसा शामिल था और इसकी राजधानी कलकत्ता थी।
- 3 दिसंबर 1903 को बंगाल विभाजन की योजना प्रकाशित की गयी और **19 जुलाई 1905 को बंगाल विभाजन की औपचारिक घोषणा की गयी। जिसमें कहा गया कि यह विभाजना 16 अक्टूबर 1905 को लागू होगा।**
- बंगाल विभाजन से जुड़े हुए व्यक्ति थे :
  वायसराय -कर्जन
  गृह सचिव - रिसले
  बंगाल का गवर्नर - फ्रेंजर
- कर्जन ने बंगाल विभाजन के कारणों को स्पष्ट करते कहा कि प्रशासनिक दृष्टिकोण से बंगाल का विभाजन किया गया है। बंगाल एक बड़ा प्रान्त है और अधिक आबादी के कारण प्रशासन का संचालन सुचारू रूप से नहीं हो पाता। इस प्रशासनिक कमजोरी से लूट-पाट बढ़ती है तथा अव्यवस्था फैलती है और जनजीवन कष्टपूर्ण हो जाता है। अत :इन समस्याओं को दूर करने के लिए बंगाल का विभाजन किया गया।

वास्तविक कारण :-

- बंगाल राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था। **बंगाल में विकसित हो रहा राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित कर रहा था। अतः राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन किया।**
- इसका प्रमाण यह है कि गृह सचिव रिसले ने कहा कि बंगाल एक बहुत बड़ी ताकत है जो विभाजित होने से कमजोर हो जाएगी।
- हिंदू मुस्लिम मतभेद पैदा कर 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत ब्रिटिश शासन को मजबूत बनाने के लिए यह विभाजन किया गया। वस्तुतः पूर्वी बंगाल में मुस्लिम बहुसंख्यक थे और मुसलमानों को अपना समर्थक बनाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने यह विभाजन किया।
- मूल बंगाल (पश्चिम बंगाल) में बांग्ला भाषियों की आबादी कम करके उन्हें गैर बांग्ला भाषियों से लड़ाने के लिए यह विभाजन किया गया। वस्तुतः यहाँ हिंदी एवं उड़िया भाषी लोगों को एक साथ रखकर गैर बांग्ला भाषी की संख्या बढ़ाकर भाषाभी मतभेद पैदा करना था।
- बंगाली अभिजात्य वर्ग की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर उसकी राजनीतिक गतिविधियों को कमजोर करना था।

परिणाम :

- बंगाल विभाजन के परिणामस्वरूप भारतीयों ने अंग्रेजों के वास्तविक उद्देश्य को समझा और इसे भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष एक चुनौती के रूप में देखा। फलतः विभाजन के विरोध में स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई। और राष्ट्रीय आंदोलन उग्रवादी विचारधारा मुक्त हुआ।

- इस आंदोलन को चलाने के क्रम में कांग्रेस के अंदर वैचारिक मतभेद बढ़ा। वस्तुतः उदारवादी एवं उग्रवादी नेताओं के बीच मतभेद बढ़ा।
- इसी क्रम में 1907 में सूरत में कांग्रेस का विभाजन हुआ। इस तरह एक विभाजन को रोकने के क्रम में विभाजन दूसरा विभाजन हो गया ।

स्वदेशी आंदोलन 1905

कारण : बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई।

- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना।
- सरकारी स्कूलों, अदालतों और उपाधियों का बहिष्कार करना । वस्तुतः बहिष्कार का सुझाव सर्वप्रथम 'कृष्ण कुमार मिश्र' ने अपनी पत्रिका 'संजीवनी' में दिया था ।
- आत्मनिर्भरता हेतु राष्ट्रीय शिक्षा एवं स्वदेशी पर बल देना।
- रचनात्मक कार्यों पर बल देकर सामाजिक सुधार करना। जैसे -बालविवाह, दहेज प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाना |
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी आंदोलन को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है जो भारतीयों की एक सफल रणनीति व दर्शन परिचायक माना जाता है। स्वदेशी का अर्थ है- अपने देश का । इस आंदोलन का मुख्य लक्ष्य ब्रिटेन में बनी वस्तुओं का बहिष्कार करना तथा भारत में बनी वस्तुओं का अधिकाधिक प्रयोग कर ब्रिटेन को आर्थिक क्षति पहुँचाना था इस रणनीति से न केवल औपनिवेशकों शासक को आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचा, बल्कि इससे देश में नए रोजगारों का भी सृजन हुआ। इसलिए इस आंदोलन को एक रणनीति के तहत् अपनाया गया था।
- स्वदेशी अपनाना एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का यह आंदोलन संपूर्ण भारत वर्ष में फैल गया। पंजाब में इस आंदोलन का नेतृत्व अजीत सिंह, लाला लाजपतराय, महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक, दिल्ली में सैयद हैदर राजा, मद्रास में चिदंबरम पिल्लै तथा संपूर्ण मध्य भारत, उत्तर भारत, बंगाल-बिहार में रविन्द्रनाथ टैगोर, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, अरविन्द घोष आदि नेताओं ने किया।

कार्यपद्धति :-

- विभिन्न समितियों का गठन कर हड़ताल का आयोजन करना। इसी क्रम में बारीसाल (कलकत्ता) में अश्विनी कुमार दत्त ने 'स्वदेश बांधव समिति' का गठन किया और लोगों को एकजुट किया।
- इन समितियों द्वारा जन जागरण के क्रम में व्याख्यानों का आयोजन होता था और स्वदेशीगीतों को गाया जाता था तथा कार्यकर्ताओं को नैतिक प्रशिक्षण दिया जाता था। इस तरह जनता को साथ लेकर ब्रिटिश विरोधी कार्यक्रम चलाया गया।
- महिलाओं द्वारा धरना प्रदर्शन कार्यक्रम चलाया गया।
- धार्मिक प्रतीकों एवं नारों का प्रयोग कर लोगों को संगठित किया गया। इसी क्रम में पारंपरिक त्योहार लोक नाट्य मंचों का उपयोग करते हुए आंदोलन का संदेश जनसमूहों तक पहुँचाया गया।
- वस्तुतः रक्षा बंधन, गणेश महोत्सव, शिवाजी महोत्सव आदि के माध्यम से लोगों को एकजुट किया गया।
- निष्क्रिय प्रतिरोध द्वारा सरकार विरोधी आंदोलन चलाया गया जिसके तहत असहयोग, बहिष्कार, धरना प्रदर्शन आदि पर बल दिया गया।

प्रसार :-

- **स्वदेशी आंदोलन की विधिवत् शुरुआत 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हाल की बैठक से हुई। जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का निर्णय लिया गया।**
- बंगाल विभाजन के दिन 16 अक्टूबर 1905 को शोक दिवस एवं हिंदू -मुस्लिम एकता दिवस के रूप में मनाया गया। एकता प्रदर्शित करने के लिए लोगों ने एक-दूसरे के कलाई पर राखी बाँधी।
- यह आंदोलन बंगाल से बाहर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भी फैला। तिलक ने पूना में आंदोलन का नेतृत्व किया तो लाला लाजपत राय ने पंजाब में तथा सैयद हैदर रजा ने दिल्ली में एवं चिदम्बरम पिल्लई ने मद्रास में आंदोलन का नेतृत्व किया। इस तरह आंदोलन अखिल भारतीय स्वरूप लिए हुए था।
- तिलक का गणपति उत्सव एवं शिवाजी उत्सव कार्यक्रम न केवल महाराष्ट्र में बल्कि बंगाल में भी स्वदेशी आंदोलन का प्रमुख माध्यम बना।

सामाजिक आधार :

- आंदोलन में विद्यार्थी मुख्य कर्ता-धर्ता बने ।उन्होंने सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया
- महिलाएं पहली बार घर से बाहर निकलकर जुलूस में शामिल हुई।
- पूर्वी बंगाल के बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय की भागीदारी नही रही । वस्तुतः अधिकांश उच्च एवं मध्य वर्ग के मुस्लिम नेता आंदोलन से दूर रहे अथवा विभाजन का समर्थन किया किंतु फिर भी अब्दुल रसूल, लियाकत हुसैन, सैयद हैदर रजा जैसे प्रगतिशील मुस्लिम आंदोलन में शामिल हुए।
- किसान इस आंदोलन से दूर रहे। दरअसल इस आंदोलन में किसानों की मांगें शामिल नहीं थी और वे जमींदारों के शोषण सेपीड़ित था।

योगदान :

- स्वदेशी आंदोलन ने राष्ट्रवाद के वैचारिक आधार का विस्तार किया और उसे उग्र रूपदिया।

प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश

प्रायद्वीपीय क्षेत्र के विभिन्न पठार

- मालवा का पठार
- बुन्देलखण्ड का पठार
- बघेलखण्ड का पठार
- छोटा नागपुर का पठार
- मेघालय का पठार
- दक्कन लावा पठार
- दण्डकारण्य पठार
- आंद्र का पठार
- कर्नाटक का पठार

प्रायद्वीपीय पठार के पर्वत एवं पहाड़ियाँ

1. अरावली की पहाड़ियाँ
2. पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखलाएँ
3. पूर्वी घाट की पर्वत श्रृंखलाएँ
4. विन्ध्यांचल पर्वतमाला
5. सतपुडा पर्वतमाला
6. निलगिरी पहाड़ियाँ
7. दक्षिणी घाट की पहाड़ियाँ

मालवा का पठार –

- आकृति- त्रिभुजाकार
- निर्माण – ज्वालामुखी क्रिया द्वारा
- मिट्टी- मध्यम काली
- फसल- कपास, सोयाबीन
- उत्तर में अरावली पर्वत, दक्षिण में विन्ध्य श्रेणी व पूर्व में बुन्देलखण्ड से घिरा हुआ है। चम्बल नदी जो यमुना नदी की सहायक नदी है मालवा पठार से ही निकली है।

बुन्देलखण्ड का पठार –इसके उत्तर में यमुना नदी दक्षिण में विन्ध्य श्रेणी उत्तर - पश्चिम में चम्बल नदी दक्षिण - पूर्व में बघेलखण्ड पठार स्थित है।

- इसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश का बांदा, हमीरपुर , ललितपुर तथा मध्यप्रदेश का दतिया, छतरपुर, पन्ना जिले आते है।

बघेलखण्ड का पठार –इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश का सतना व रीवा जिला शामिल हैं तथा उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर का कुछ भाग आता है।

- **छोटा नागपुर का पठार** – इसका विस्तार मुख्यत: झारखण्ड राज्य में है।
- महानदी इसकी दक्षिणी व सोन नदी इसके उत्तर - पश्चिम से बहती है।
- छोटा नागपुर का पठार खनिज संसाधन में धनी है।
- दामोदर नदी इसे दो भागों में विभाजित करती है।
- इसके उत्तर में कोडरमा व हजारीबाग का पठार तथा दक्षिण में राँची का पठार स्थित है।
- इस पठार में तीन पहाड़ियाँ क्रमशः डालमा, पोरहाट व राजमहल है राजमहल पहाड़ी पर ही छोटा नागपुर पठार की सर्वोच्च चोटी पारसनाथ (1365मी.) स्थित है।
- छोटा नागपुर का पठारी क्षेत्र अनेक प्रकार के खनिजों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन सर्वाधिक प्रसिद्ध कोयले के खनन के लिए है। जिस प्रकार जर्मनी देश का रूर प्रदेश कोयले के खनन के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है, उसी प्रकार भारत में छोटा नागपुर का पठारी क्षेत्र भारत में कोयले के खनन के लिए प्रसिद्ध है। **इसलिए छोटा नागपुर पठार को भारत का रूर प्रदेश कहा जाता है।**
- **दण्डकारण्य का पठार-**
- दक्षिण छत्तीसगढ़ व उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश के कुछ भाग में इसका विस्तार है।
- **दक्कन का लावा पठार –**
- दक्षिण भारत में क्रिटेशियस काल में दरारों से निकले लावा के फलस्वरूप इस पठार का निर्माण हुआ है इसका मुख्यत: विस्तार महाराष्ट्र में देखने को मिलता है।

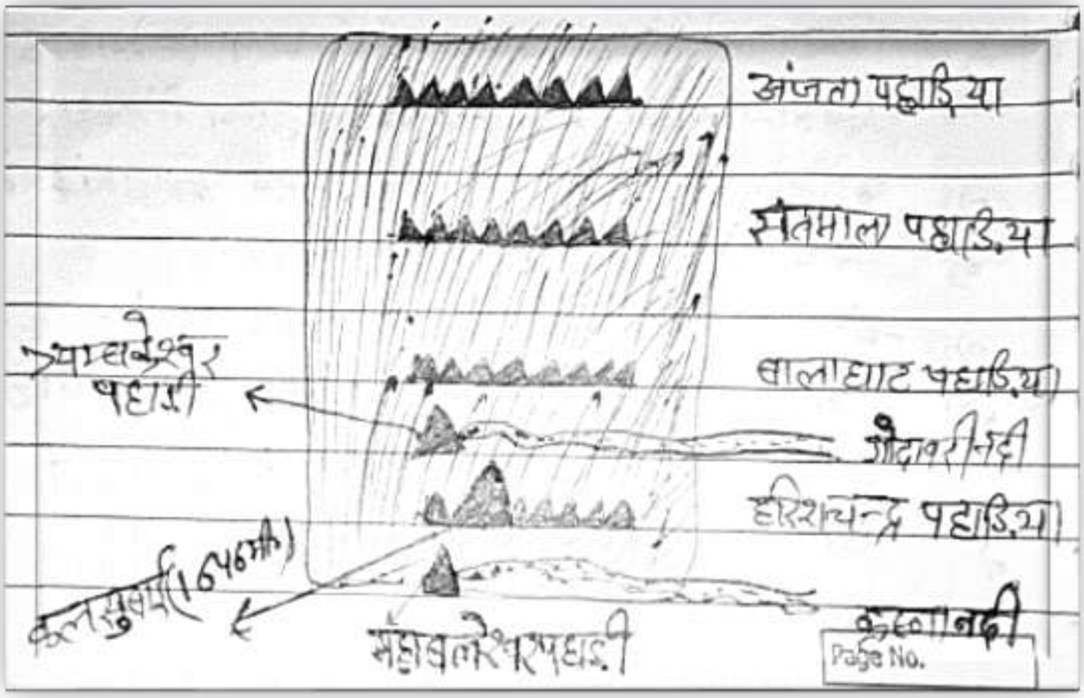

मेघालय या शिलांग का पठार –

- यह पठार प्रायद्वीपीय पठार का विस्तार है। इस पठारी भाग पर गारो खासी जयंतिया जनजाति निवास करती है इस कारण यहाँ पर स्थित तीन पहाड़ियों के नाम भी गारो, खासी, जयन्तिया है।
- खांसी की पहाड़ियों पर दक्षिण दिशा में विश्व का सर्वाधिक वर्षा प्राप्ति वाला स्थल मोसिनराम स्थित है। (कारण-खांसी की पहाड़ियों का शीर्ष भाग मेज के समान समतल व कीपनुमा है।) इसके निकट ही चेरापूंजी स्थित है।
- मेघालय के पठार की सर्वोच्च पर्वत चोटी नोकरेक (1412मी.) गारों पहाड़ी पर स्थित है।

मालदा गैप -मेघालय के पठार को प्रायद्वीपीय भारत से अलग करता है।

- इसके उत्तर दिशा में कार्बी एलोंग का पठार (असम) स्थित है।

आँध्र का पठार :- यह पठार दो भागो में वर्गीकृत किया गया है। इसके उतरी भाग को तेलंगाना का पठार कहते हैं। जबकि दक्षिणी भाग को रॉयल सीमा का पठार कहते हैं जो की आन्ध्रप्रदेश राज्य में स्थित है।

- इस पठारी क्षेत्र में चर्नोकोलाइट व खांडेलाइट (चूनेदार) चट्टानें पायी जाती है।

कर्नाटक का पठार :- इस पठार को भी दो भागों में वर्गीकृत किया गया है।

- **उत्तरी कर्नाटक का पठार**
  मैसूर का पठार
- मैसूर का पठारी क्षेत्र कर्नाटक राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसी क्षेत्र में बाबाबुदन की पहाड़ियाँ पायी जाती है।
- मैसूर पठार में धारवाड़/आर्कियन युग की चट्टानें पायी जाती है। जिनमें लोहे के भण्डार पाये जाते हैं।

सागर (MP) 2. राणा प्रताप सागर (चित्तौड़गढ़, राजस्थान) 3. कोटा बैराज (कोटा, राजस्थान) जवाहरसागर (कोटा, राजस्थान)

- इटावा (UP) के निकट यमुना में मिल जाती है ।

सिन्ध

- उद्गम- मालवा का पठार , विदिशा (MP)
- बुंदेलखण्ड (UP) के निकट यमुना में मिल जाती है ।
- इस नदी पर मध्यप्रदेश राज्य में मानीखेडा बाँध बनाया गया है ।

बेतवा

- उद्गम- विध्यांचल पर्वतमाला (MP)
- हमीरपुर (UP)के पास यमुना में विलेय
- इस नदी पर मध्यप्रदेश राज्य में माताटीला परियोजना स्थित है ।

केन

- उद्गम- कैमूर की पहाड़ी (M.P.)
- फतेहपुर के निकट यमुना में विलेय
- यह नदी मध्यप्रदेश के पन्ना राष्ट्रीय उद्यान से होकर गुजरती है ।

सोन नदी-

- यह मध्यप्रदेश में अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती है तथा पटना से पहले गंगा के दायीं तट से इससे मिल जाती हैं ।

दामोदर नदी

- उद्गम- घोटानागपुर पठार (झारखण्ड)
- दाहिनी ओर से मिलने वाली गंगा की अंतिम सहायक नदी ।
- यह नदी ढाल पर बहती है तो सीढ़ीनुमा जल प्रपातों का निर्माण करती है तथा ऐसे जल प्रपातों को सोपानी जल प्रपात /Terraced slope / क्षिप्रिकाएँ कहते है ।
- भारत में सर्वाधिक क्षिप्रिकाएँ बनाने वाली नहीं है ।
- इसे बंगाल का शोक कहते है
- विश्व में सर्वाधिक क्षिप्रिकाएँ बनाने वाली नदी- कोलरेडो नदी (U.S.A.)
- बहुउद्देशीय परियोजना के तहत कुल- 8 बाँध बनाए गए।
- भारत में सबसे प्राचीन नदी घाटी परियोजना है । कार्य- 1948 में प्रारम्भ
- **NOTE-** विश्व की सबसे प्राचीन नदी घाटी परियोजना- टेनिस (USA)

रामगंगा नदी-

- इसका उद्गम उत्तराखंड राज्य में हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में नमीक ग्लेशियर से होता है।
- यहां से उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश राज्यों में बनने के बाद उत्तर प्रदेश के कन्नौज स्थान पर जाकर गंगा नदी में मिल जाती है।
- उत्तराखंड राज्य में नैनीताल नगर स्थित है।
- रामगंगा नदी पर उत्तराखंड राज्य में स्थित जिम कार्बेट नेशनल पार्क (नया नाम रामगंगा नेशनल पार्क है) स्थित है। इस नदी के किनारे उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद, बरेली व बदायूं नगर स्थित है ।

गोमती नदी-

- यह नदी उत्तरप्रदेश के पीलीभीत जिलें से निकलती है तथा गाजीपुर में गंगा नदी से मिलती है।
- लखनऊ व जौनपुर इसी के किनारे बसे हैं ।

घाघरा नदी-

- तिब्बत के पठार में स्थित मापचाचुंगों हिमनद से निकलती हैं तथा बाराबंकी जिला (उत्तरप्रदेश) में सरयू
- (शारदा नदी) इससे आकर मिलती है। और अन्ततः यह छपरा (बिहार) में गंगा से मिलती है

गंडक नदी –

- नेपाल (धौलागिरि व माउंट एवरेस्ट) से इसका उद्गम होता है तथा यह अन्ततः सोनपुर (बिहार) में गंगा से मिल जाती है।
- यह नदी बिहार राज्य के वाल्मीकि नेशनल पार्क से गुजरती है।
- **कोसी नदी –**
- इसका स्त्रोत तिब्बत में माउंट एवरेस्ट के उत्तर में है जहाँ से इसकी मुख्य धारा अरुण निकलती है।
- कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है।
- **महानंदा नदी –**
- महानंदा गंगा के बाएँ तट पर मिलने वाली अंतिम सहायक नदी है जो दार्जिलिंग की पहाड़ियों से निकलती है।

<u>ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र</u> (The Brahmaputra River System)

- ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम हिमालय के उत्तर में स्थित मानसरोवर झील के निकट चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है।
- तिब्बत में ब्रह्मपुत्र को सांग्पो (Tsangpo) के नाम से जाना जाता है। जिसका अर्थ शेरनी होता है ।
- नामचा बरवा के निकट हिमालय को काटकर तथा "U" टर्न बनाते हुए गहरे गार्ज (महाखंड) का निर्माण करती है और दिहांग के नाम से भारत में प्रवेश करती है।
- कुछ दूर तक दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहने के बाद इसकी दो प्रमुख सहायक नदियाँ दिबांग और लोहित इसके बाएँ किनारे पर आकर मिलती है।
- इसके बाद इस नदी को ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है।
- ब्रह्मपुत्र नदी असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से निकलती है जो एक सींग वाले के लिए प्रसिद्ध है ।

- इसकी अन्य सहायक नदियाँ धनसरी, सुबनसिरी, मानस, कामेग व संकोश, पगलादिया आदि हैं।
- ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लम्बाई 2900 किमी है, जिसमें 916 किमी. भारत में बहती है।

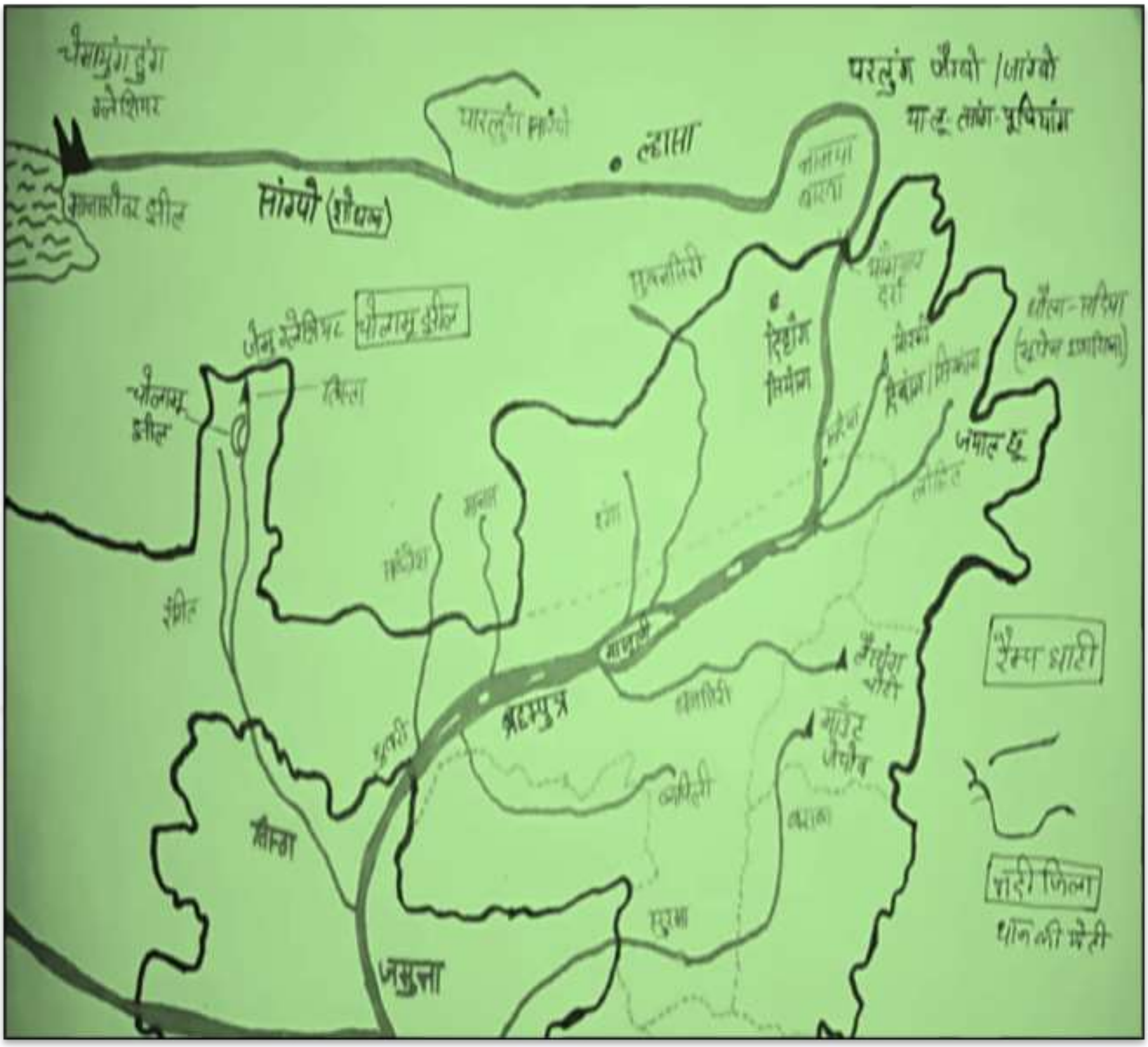

- असम के धुबरी के निकट ब्रह्मपुत्र दक्षिण दिशा में बहती हुई बांग्लादेश में प्रवेश करती है।
- बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र को जमुना के नाम से जाना जाता है।
- जमुना में दाहिनी ओर से तिस्ता नदी आकर मिलती है। जमुना आगे जाकर पद्मा में मिल जाती है तथा पद्मा मेघना से मिलने के बाद, मेघना नाम से बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
- असम घाटी में ब्रह्मपुत्र नदी गुंफित जल मार्ग बनाती है, जिसमें माजुली जैसे कुछ बड़े नदी द्वीप भी मिलते हैं।

दायीं ओर से मिलने वाली नदियाँ

- सुबनसिरी नदी / सुवनश्री
- उद्भव- भूटान हिमालय से (तिब्बत)
- प्रवाह – तिब्बत, अरुणाचल प्रदेश व असम
- असम के लखीमपुर जिले के नजदीक ब्रह्मपुत्र नदी से मिल जाती है।
- दाहिनी ओर से मिलने वाली प्रथम नहीं है।
- भारत व भूटान की सीमा बनाती है।

मानस नदी

- उद्गम - डोक्या रेंज (भूटान)
- असम में मानस उद्यान से होकर बहती है।
- असम के वारपेटा स्थान के निकट ब्रह्मपुत्र में मिल जाती है।

संकोश नदी

- उद्गम – द. हिमालय , तिब्बत
- प्रवाह क्षेत्र - तिब्बत, भूटान व असम

तिस्ता नदी

- उद्गम – जेमू ग्लेशियर, नितामू झील , सिक्किम
- प्रवाह क्षेत्र - सिक्किम प. बंगाल

• यह नदियाँ नवीन वलित पर्वतीय क्षेत्र से बहती हैं, अतः ये युवा अवस्था में हैं।	• इस अपवाह तंत्र की नदियाँ पठारी क्षेत्र से बहती हैं, अतः ये नदियाँ वृद्धावस्था में है।
• इस तंत्र की नदियों की अपरदन क्षमता अधिक हैं।	• इन नदियों की निक्षेपण क्षमता अधिक हैं।
• इस तंत्र की नदियाँ गहरी आकार की घाटी गार्ज तथा कैनियन का निर्माण करती है।	• इस तंत्र की नदियाँ चौड़ी घाटी का निर्माण करती हैं।
• इस तंत्र नदियों के पास अवसादों की मात्रा अधिक पाई जाती है , अतः यह विस्तृत मैदान का निर्माण करती हैं।	• इस तंत्र की नदियों के पास अवसादों की मात्रा कम होती है, अतः सीमित मैदान का निर्माण करती है।
• इस तंत्र की नदियों के अपवाह का तल जलोढ़ अवसादों से बना है।	• इस तंत्र की नदियों के अपवाह का तल कठोर चट्टानों से बना है।
• ये नदियाँ विशाल मैदानी क्षेत्र में विसर्पण करती हैं।	• ये नदियाँ केवल डेल्टा क्षेत्र में विसर्पण करती हैं।
• यहाँ की बहुत सी नदियाँ पूर्ववर्ती हैं। क्योंकि इन नदियों का निर्माण हिमालय के निर्माण से पूर्व हो चुका था।	• यहाँ की सभी नदियाँ अनुवर्ती हैं। क्योंकि इन नदियों का उद्गम प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र के निर्माण के बाद हुआ था।
• यहाँ की नदियाँ लम्बी हैं।	• यहाँ की नदियाँ लम्बाई में कम हैं।
• इन नदियों के पास जल की मात्रा अधिक हैं, तथा यह गहरी घाटियों से बहती है , अतः इनकी जल विद्युत उत्पादन क्षमता अधिक हैं परन्तु इनकी क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं हो पाता है।	• इन नदियों में जल की मात्रा सीमित हैं, तथा यह कम गहरी घाटियों से बहती है। अतः इनकी जल विद्युत उत्पादन क्षमता कम है। परन्तु इनकी पूर्ण क्षमता का उपयोग किया जा चुका है।
• इस तंत्र की नदियाँ विस्तृत मैदान में बहती हैं। अतः यह नौवहन के लिए अधिक उपयोगी हैं।	• इस तंत्र की नदियाँ पठारी क्षेत्र से बहती हैं , अतः ये नौवहन के लिए कम उपयोगी हैं। केवल इनके डेल्टा क्षेत्र में नौवहन की जा सकता है।

डेल्टा और ज्वारनदमुख में अन्तर :-

डेल्टा	ज्वारनदमुख
• यह एक त्रिभुजाकार भू-आकृति होती हैं।	• जबकि ज्वारनदमुख का निर्माण नदी के मुहाने पर गहरी संकरी घाटी के रूप में होता है।
• समुद्र में गिरते समय जब नदी विभिन्न उपशाखाओं में विभाजित हो जाती हियो तो डेल्टा का निर्माण करती हैं।	• जबकि समुद्र में गिरते समय नदी की धारा उपधाराओं में विभाजित न होकर एक ही धारा के रूप में गिरती हैं, तो ज्वारनदमुख का निर्माण होता है।
• डेल्टाओं का निर्माण महासागर के निम्न ज्वार वाले क्षेत्रों में होता है।	• जबकि ज्वारनदमुखों का निर्माण उच्च ज्वार वाले क्षेत्रों में होता है।
• डेल्टा उपजाऊ भूमि होते हैं, जो कृषि गतिविधियों के लिए उपयुक्त होते हैं।	• जबकि ज्वारनदमुख पोषक तत्वों से युक्त जल क्षेत्र होते हैं। और इन क्षेत्रों में मछली पकड़ने का कार्य किया जाता है।
• भारत की बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ डेल्टाओं का निर्माण करती हैं। जैसे- गंगा नदी, ब्रह्मपुत्र नदी गोदावरी नदी आदि।	• जबकि अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं। जैसे - साबरमती नदी, माही नदी, नर्मदा, ताप्ती नदी आदि।

भारत की प्रमुख झीलें

- भारत में अधिकांश झीलें उत्तर के पर्वतीय प्रदेशों में पाई जाती हैं, परन्तु समुद्र तटीय क्षेत्रों में भी भारत की कुछ महत्त्वपूर्ण झीलें स्थित हैं।
- भारत में कई प्राकृतिक एवं मानव निर्मित झीलें पाई जाती हैं।
- मानव निर्मित झीलें बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं के अन्तर्गत बनाए गए जलाशयों के रूप में स्थित हैं।

- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पुरुष और महिला साक्षरता के बीच का अंतर 16.3 प्रतिशत हैं ।
- भारत में सर्वाधिक पुरुष-स्त्री साक्षरता दर में अंतर वाले
- दो राज्य क्रमशः राजस्थान (27.1) और झारखण्ड (21.4) हैं।
- भारत में न्यनतम पुरुष-स्त्री साक्षरता दर में अंतर वाले दो राज्य क्रमशः मेघालय (3.1) और मिजोरम/केरल (4.0) हैं।

शीर्ष स्त्री साक्षरता

राज्य/केन्द्रशासित प्रदेश	प्रतिशत
केरल	92.1
मिजोरम	89.3
लक्षद्वीप	87.9

न्यूनतम स्त्री साक्षरता

राज्य	प्रतिशत
बिहार	51.5
राजस्थान	52.1
झारखण्ड	55.4

साक्षर जनसंख्या में वृद्धि वाले शीर्ष राज्य / केन्द्रशासित प्रदेश

राज्य/ केन्द्रशासित प्रदेश (2001-2011)	प्रतिशत
दादर नगर हवेली	119.46
दमन द्वीव	75.63
बिहार	74.83

हमारी पृथ्वी व अंतरिक्ष

अध्याय – 1

❖ ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल

- ब्रह्मांड का अध्ययन खगोलिकी कहलाता है।
- महाविस्फोट सिद्धांत (big-bang theory) ब्रह्मांड की उत्पत्ति से संबंधित है ।
- ब्रह्मांड दिखाई पड़ने वाले समस्त आकाशीय पिंड को ब्रह्मांड कहते हैं। ब्रह्मांड विस्तारित हो रहा है ब्रह्मांड में सर्वाधिक संख्या तारों की है।

तारा

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश हो तारा कहलाता है।
- तारा बनने से पहले विरल गैस का गोला होता है।
- जब ये विरल गैस केंद्रित होकर पास आ जाते हैं तो घने बादल के समान हो जाते हैं जिन्हें निहारिका कहते हैं।
- जब इन नेबुला में सलंयनविधि द्वारा दहन की क्रिया प्रारंभ हो जाती हैं तो वह तारों का रूप ले लेता है।
- तारों में हाइड्रोजन का सलंयन हिलियम में होता रहता है । तारों में इंधन प्लाज्मा अवस्था में होता है।
- तारों का रंग उसके पृष्ठ ताप पर निर्भर करता है ।
- लाल रंग - निम्न ताप (6 हजार डिग्री सेल्सियस)
- सफेद रंग - मध्यम ताप
- नीला रंग - उच्च ताप

तारों का भविष्य उसके प्रारंभिक द्रव्यमान पर निर्भर करता है।

- जब तारा सूर्य का ईंधन समाप्त होने लगता है तो वह लाल दानव का रूप ले लेता है और लाल दानव का आकार बड़ा होने लगता है।
- यदि लाल दानों का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान के 1.44 गुना से छोटा होता है तो वह श्वेत वामन बनेगा।

सौर मंडल

- सूर्य तथा उसके आसपास के ग्रह, उपग्रह तथा शुद्र ग्रह, धूमकेतु, उल्कापिंड उनके संयुक्त समूह को सौरमंडल कहते हैं ।
- सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है ।
- सौरमंडल में जनक तारा के रूप में सूर्य है।
- सौर मंडल के सभी पिंड सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

सूर्य

- यह हमारा सबसे निकटतम तारा है सूर्य सौरमंडल के बीच में स्थित है। सूर्य की आयु लगभग 15 अरब वर्ष है जिसमें से वह 5 अरब वर्ष जि चुका है।

- सूर्य के अंदर हाइड्रोजन का हिलियम में संलयन होता है और ईंधन प्लाज्मा अवस्था में रहता है।
- आंतरिक संरचना के आधार पर सूर्य को तीन भागों में बांटते हैं।

सूर्य की बाहरी परत

- सूर्य के बाहर उसकी तीन परतें हैं ।

1. **प्रकाश मंडल**

- यह सूर्य का दिखाई देने वाला भाग है इसका तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस होता है।

2. **वरुण मंडल**

- यह बाहरी परत के आधार पर मध्य भाग है इसका तापमान 32400 डिग्री सेल्सियस होता है।

3. **कोरोना (corona)**

- यह सूर्य का सबसे बाहरी परत होता है जो लपट के समान होता है इसे केवल सूर्य ग्रहण के समय देखा जाता है इसका तापमान 27lac डिग्री सेल्सियस होता है।
- सूर्य में 75% हाइड्रोजन तथा 24% हिलीयम है ।
- शेष तत्व की मात्रा 1% में ही निहित है ।
- सूर्य का द्रव्यमान पृथ्वी से 332000 गुना है ।
- सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुना है ।
- सूर्य का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से 28 गुना है ।
- सूर्य का घनत्व पृथ्वी से 20 गुना है।
- सूर्य से प्रति सेकंड 10^{26} जूल ऊर्जा निकलती है ।
- सूर्य पश्चिम से पूरब घूर्णन करता है।
- सूर्य का विषुवत रेखीय भाग 25 दिन में घूर्णन कर लेता है।
- सूर्य का ध्रुवीय भाग 31 दिन में घूर्णन कर लेता है ।

ग्रह

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास ना अपनी ऊष्मा हो और ना ही अपना प्रकाश हो वह ऊष्मा तथा प्रकाश के लिए अपने निकटतम तारे पर आश्रित हो।तथा उसी का चक्कर लगाता हो प्रारंभ मे ग्रहों कि संख्या 9 थी परंतु वर्तमान में 8 ग्रह है ग्रहों का 2 श्रंणियों में बांटते है ।

पार्थिव

- इन्हें आंतरिक ग्रह भी कहते हैं ।
- यह पृथ्वी से समानता रखते हैं ।
- इनका घनत्व अधिक होता है तथा यह ठोस अवस्था में होते हैं ।
- इनके उपग्रह कम होते हैं या होते ही नहीं है इन ग्रहों की संख्या चार होती है।

a. बुध
b. शुक्र
c. पृथ्वी
d. मंगल

जोवियन ग्रह

- इसे बाह्य ग्रह कहते हैं। यह बृहस्पति से समानता रखते हैं ।इनका आकार बड़ा होता है किन्तु घनत्व कम होता है, यह गैस की अवस्था में पाए जाते हैं।
- इनके उपग्रहों की संख्या अधिक है।

प्लूटो

- यह नौवां ग्रह था । किन्तु 24 अगस्त 2006 को चेक गणराज्य की राजधानी प्राण में अंतरराष्ट्रीय खगोल खंड की बैठक हुई जिसमें प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालकर बोना ग्रह में डाल दिया ।
- प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालने के तीन कारण थे

1. इसका आकार अत्यधिक छोटा था
2. इसकी कक्षा दीर्घ वर्तीय नहीं थी
3. इसकी कक्षा वरुण की कक्षा को काटती थी

उपग्रह

- इनके पास ऊष्मा और प्रकाश दोनों नहीं था ।
- यह अपने निकटतम तारे से ऊष्मा और प्रकाश लेते हैं किन्तु यह चक्कर अपने निकटतम ग्रह का लगाते हैं ।

उपग्रह दो प्रकार के होते हैं

1. **प्राकृतिक उपग्रह** -चंद्रमा
2. **कृत्रिम उपग्रह** -यह मानव निर्मित होते हैं संचार तथा मौसम की भविष्यवाणी करता है।

सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रह

1. बुध
2. पृथ्वी
3. बृहस्पति
4. अरुण
5. शुक्र
6. मंगल
7. शनि
8. वरुण

पृथ्वी से दूरी के अनुसार

1. शुक्र
2. मंगल
3. बुध
4. बृहस्पति
5. शनि
6. अरुण
7. वरुण

अध्याय – 2

अक्षांश व देशान्तर

अक्षांश: भू-पृष्ठ पर विषुवत रेखा या भूमध्यरेखा (Equator) उत्तर या दक्षिण में एक याम्योत्तर (Meridian) पर किसी भी बिन्दु को पृथ्वी के केन्द्र से मापी गई कोणीय दूरी अक्षाश कहलाती है। इसे अंशो मिनटों व सेकेंडों में दर्शाया जाता है। भूमध्यरेखा 0 का अक्षाश है। यह पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटता है। भूमध्यरेखा से समानान्तर ध्रुव तक दोनों गोलार्द्ध में अनेक वृत्तों का निर्माण होता है।

ये वृत्त 'अक्षांश रेखाएँ' कहलाती हैं। उत्तरी व दक्षिणी गोलार्द्ध में यह 0° से 90° तक पाई जाती है। इस प्रकार 181 अक्षांश रेखाएँ होती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में 231S° N कर्क रेखा (Tropic of Cancer) और 661°N उत्तरी उपध्रुव वृत्त (Subarctic) तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में 23% S मकर रेखा (Tropic of Capricorn) और 66% S दक्षिणी उपध्रुव वृत्त (Sub- Antarctic) कहलाते हैं। प्रत्येक " को अक्षाशीय दूरी लगभग 111 किमी. है, जो पृथ्वी के गोलाकार होने के कारण भूमध्य रेखा से ध्रुवों तक भिन्न-भिन्न मिलती है।

देशान्तर: किसी स्थान की कोणीय दूरी जो प्रधान याम्योत्तर (Meridian) के पूर्व या पश्चिम में होती है, देशान्तर कहलाती है।

प्रधान याम्योत्तर रेखा 0° देशांतर को माना गया है। यह लंदन के ग्रीनविच से होकर गुजरती है। 0° के दोनों ओर 180° तक देशान्तर रेखाएँ होती हैं, जो कुल मिलाकर 360° हैं। जहाँ केवल 0° अक्षांश रेखा पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटती है, वहीं सभी देशान्तर रेखाएँ यह कार्य करती हैं। इसीलिए इन सभी को महान वृत (ग्रेट सर्किल) कहा जाता है। 1° देशान्तर भूमध्यरेखा पर दूरी 11.32 किमी. है, जो ध्रुवों की ओर कम होती जाती है। ग्रीनविच रेखा के पूर्व में स्थित 180° तक सभी देशान्तर 'पूर्वी देशान्तर' एवं पश्चिम की ओर स्थित सभी देशान्तर पश्चिमी देशान्तर' कहे जाते हैं। ये क्रमशः पूर्वी गोलार्द्ध एवं पश्चिमी गोलार्द्ध कहलाते हैं। गोलाकार होने के कारण पृथ्वी 24 घंटे में 360" घूम जाती है, अतः 1° देशान्तर की दूरी तय करने में पृथ्वी को 4 मिनट का समय लगता है।

चूंकि सूर्य पूर्व में उदित होता है तथा पृथ्वी पश्चिम से पूर्व अपनी धुरी पर घूम रही है। अत: पूर्व का समय आगे की ओर तथा पश्चिम का समय पीछे रहता है। इसी कारण पृथ्वी के सभी स्थानों पर समय की भिन्नता देखने को मिलती है। प्रत्येक 150 देशांतर पर एक घंटे का अंतर होता है। इस प्रकार 0° से 1801 पूर्व की ओर जाने पर 12 घंटे की अवधि लगती है तथा यह ग्रीनविच समय से 12 घंटे आगे होता है। इसी प्रकार 0° से 180° पश्चिम की ओर जाने पर ग्रीनविच समय से 12 घंटे पीछे का समय मिलता है। यही कारण है कि 180° पूर्व व पश्चिम देशान्तर में कुल 24 घंटे अर्थात् एक दिन और रात का अंतर पाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा: पृथ्वी पर 180° याम्योत्तर के लगभग साथ-साथ स्थलखंडों को छोड़ते हुए निर्धारित की गई काल्पनिक रेखा, 'अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा' (International Date Line) कहलाती है। साइबेरिया को विभाजित होने से बचाने एवं साइबेरिया को अलास्का से अलग रखने के लिए 75° उत्तरी अक्षांश पर यह पूर्व की ओर मोड़ी गई है। बेरिंग सागर में यह रेखा पश्चिम की ओर मोड़ी गई है। फिजी द्वीप समूह एवं न्यूजीलैंड के विभिन्न भागों को एक साथ रखने के लिए यह रेखा दक्षिणी प्रशांत महासागर में पूर्व दिशा की ओर मोड़ी गई है। अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पूर्व व पश्चिम में एक दिन का अंतर पाया जाता है। अतः इसे पार करते समय एक दिन बढ़ाया या घटाया जाता है। जब कोई जलयान अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा को पार कर पश्चिम दिशा में यात्रा करता एक दिन जोड़ दिया जाता है तथा जब पूर्व दिशा में यात्रा करता है तो एक दिन घटा दिया जाता है।

स्थानीय समय (Local Time): यह पृथ्वी पर स्थान विशेष का सूर्य की स्थिति से परिकलित समय है। स्थानीय मध्याह्न समय वह समय है जब सूर्य उस स्थान विशेष पर लम्बवत् चमकता है। भारत के सर्वाधिक पूर्व (अरुणाचल प्रदेश) एवं सर्वाधिक, पश्चिम (गुजरात के द्वारका) में स्थित स्थानों के स्थानीय समय में लगभग दो घंटे को अंतर मिलता है।

मानक समय (Standard Time) किसी देश के मध्य से गुजरने वाली याम्योत्तर का माध्य होता है, जो स्थानीय समय की असुविधा के कारण संपूर्ण देश के लिए लागू माना जाता है। उदाहरण के लिए 82% याम्योत्तर जो कि इलाहाबाद के. निकट नैनी से गुजरती है, का समय संपूर्ण भारत के लिए मानक समय (IST) है। इससे भारत के विभिन्न प्रदेशों में देशान्तरीय अंतर के कारण समय की भिन्नता को समायोजित करने की समस्या से निजात मिल जाती है।

स्थानीय समय की गणना में सहायक कुछ प्रमुख तथ्य

1. 0° देशांतर (ग्रीनविच रेखा) के बायीं और पश्चिमी देशांतर व दायीं ओर पूर्वी देशांतर होते हैं जबकि 180° देशांतर (अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा) के बायीं ओर पूर्वी देशांतर व दायीं ओर पश्चिमी देशांतर होते हैं।

अध्याय – 7

पृथ्वी के प्रमुख जलवायु कटिबंध

जलवायु विस्तृत क्षेत्र में कई वर्षों की लम्बी अवधि तक पाई जाने वाली दशाओं का औसत होता है। यह प्रतिदिन नहीं बदलता। किसी भी स्थान के मौसम एवं जलवायु को निर्धारित करने वाले प्रमुख भौतिक तत्त्व हैं -अक्षांश रेखायें, समुद्र तल से ऊँचाई और समुद्र से दूरी। विश्व के प्रमुख जलवायु क्षेत्र पर नीचे चर्चा की गयी है:

1. भूमध्यरेखीय जलवायु क्षेत्र (10° उत्तर to 10° दक्षिण)

यह भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में 5 डिग्री और 10 डिग्री के बीच पाया जाता है। इस क्षेत्र में भारी वर्षा होती है जो 150 सेमी / वर्ष के बीच होती है। गर्मी के कारण, सुबह उज्वल और धूप वाली होती है और शाम को संवहनी वर्षा होती है। थंडर बिजली अक्सर मूसलाधार शावर के साथ होती है। यह क्षेत्र प्राकृतिक रबड़ के लिए भी जाना जाता है जिसे **हेवी ब्रासिलिनेसिस** कहा जाता है। **अमेज़ॅन बेसिन** (दक्षिण अमेरिका), **ज़ैर बेसिन** (अफ्रीका) विशेष रूप से पश्चिमी हिस्से में, और **दक्षिण पूर्व एशिया** (मुख्य रूप से द्वीप) इस श्रेणी का महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

2. सवाना या सूडान जलवायु (10° to 20° उत्तर और दक्षिण)

यह भूमध्य रेखा और ट्रेड-वींड गर्म रेगिस्तान के बीच पाए जाने वाले जलवायु का एक संक्रमणकालीन प्रकार है। यह उष्णकटिबंधीय के भीतर ही सीमित है और सूडान के क्षेत्रों में विकसित होता है जहां सूखे और गीले मौसम सबसे अलग हैं, इसलिए इसका नाम सुदान जलवायु है। इस जलवायु की विशेषता एक वैकल्पिक गर्म, बरसात के मौसम और ठंडा, शुष्क मौसम है।

इस क्षेत्र की सबसे प्रचलित हवा ट्रेड-वींड हैं, जो तटीय जिलों में बारिश लाती हैं। सवाना उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की घास के मैदान हैं। वे दुनिया के प्राकृतिक चिड़ियाघर के रूप में जाना जाता है। दक्षिण अमेरिका में **लानानोस और कैम्पोस**; अफ्रीका में **कानो और सैलिसबरी क्षेत्र; ऑस्ट्रेलिया का उत्तरी और मध्य भाग** इस श्रेणी के महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

3. गर्म रेगिस्तान और मध्य अक्षांश रेगिस्तान जलवायु (20° to 30° उत्तर और दक्षिण)

गर्म रेगिस्तान की आर्द्रता मुख्य रूप से समुन्द्र किनारे ट्रेड-वींड प्रभावों के कारण होती है; इसलिए उन्हें रेगिस्तानी ट्रेड-वींड भी कहा जाता है। सहारा (अफ्रीका) सबसे बड़ा रेगिस्तान है और उसके बाद सबसे बड़ी ग्रेट ऑस्ट्रेलियाई रेगिस्तान है। यह 20 डिग्री से 30 डिग्री उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। गर्म रेगिस्तान: **सहारा, ऑस्ट्रेलिया, अरबी, ईरानी, थार, कालाहारी, नामीब, नुबियन, मोहाव (यूएसए), अटाकामा** आदि। शीत या ठंडी रेगिस्तान: **पेटागोनिया, तुर्कस्तान, गोबी** इत्यादि।

दुनिया के सभी उष्णकटिबंधीय रेगिस्तान महाद्वीप के पश्चिम दिशा में ही क्यों स्थित हैं?

4. गर्म तापमान वाला पश्चिमी मार्जिन या भूमध्य जलवायु (30° to 40° उत्तर और दक्षिण)

इस तरह की जलवायु भूमध्य द्रोणी क्षेत्र में व्यापक है। भूमध्य सागर के अलावा कैलिफ़ोर्निया के तटवर्ती क्षेत्र, पश्चिमी और दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया के कुछ क्षेत्र, दक्षिणपश्चिमी दक्षिण अफ़्रीका और मध्य चिली में भी इस प्रकार की मौसमी परिस्थितियाँ मिलती हैं। इन इलाक़ों में हलकी ठंड व वर्षा वाली शीतऋतु और मध्यम गरमी वाली व शुष्क ग्रीष्मऋतु होती है। कोपेन जलवायु वर्गीकरण में दो प्रकार के भूमध्य जलवायु बताएँ गए हैं: गरम ग्रीष्मऋतु भूमध्य जलवायु और हलकी-गरम ग्रीष्मऋतु भूमध्य जलवायु।

महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं: **भूमध्य सागर के तटीय क्षेत्र; केप टाउन के पास दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका के दक्षिणी सुझाव; दक्षिणी ऑस्ट्रेलियाई (दक्षिणी विक्टोरिया में और एडीलेड के आसपास, सेंट विन्सेंट और स्पेंसर खाड़ी के किनारे); दक्षिण पश्चिम ऑस्ट्रेलिया (स्वानलैंड); सैन फ्रांसिस्को के आसपास कैलिफोर्निया; दक्षिण अमेरिका में सेंट्रल चिली।** यह क्षेत्र बागान खेती जैसे साइट्रस और रेशेदार फल के लिए प्रसिद्ध है।

5. समशीतोष्ण घास के मैदान (स्तॅप, स्तॅपी या स्टेपी) जलवायु (40° to 55° उत्तर और दक्षिण)

यूरेशिया के समशीतोष्ण (यानि टॅम्प्रेट) क्षेत्र में स्थित विशाल घास के मैदानों को कहा जाता है। यहाँ पर वनस्पति जीवन घास, फ़ूस और छोटी झाड़ों के रूप में अधिक और पेड़ों के रूप में कम देखने को मिलता है। यह पूर्वी यूरोप में युक्रेन से लेकर मध्य एशिया तक फैले हुए हैं। स्तॅपी क्षेत्र का भारत और यूरेशिया के अन्य देशों के इतिहास पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है। ऐसे घासदार मैदान दुनिया में अन्य स्थानों में भी मिलते हैं: इन्हें यूरेशिया में "स्तॅपी", उत्तरी अमेरिका में "प्रेरी" (prairie), दक्षिण अमेरिका में "पाम्पा" (pampa) और दक्षिण अफ़्रीका में "वॅल्ड" (veld) कहा जाता है।

6. समशीतोष्ण महाद्वीपीय या ताइगा या साइबेरियाई जलवायु (55° to 70° उत्तर और दक्षिण)

इस तरह की जलवायु की विशेषता यह है कि यहाँ गर्मी और सर्दी के मौसम के तापमान में अधिक अन्तर नहीं

5. इसके कार्यों का निर्धारण मंत्रीमंडल करता है।	**5.** यह मंत्रिपरिषद को राजनैतिक निर्णय लेकर निर्देश देता है। तथा ये निर्देश सभी मंत्रीयों पर **बाध्यकारी** होते हैं।
6. यह मंत्रीमंडल के निर्णयों को लागू करती है।	**6.** यह मंत्रिपरिषद द्वारा अपने **निर्णयों** के अनुपालन की देखरेख करता है।
7. यह सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी है।	**7.** यह मंत्रिपरिषद की लोकसभा के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी को लागू करता है।

अध्याय – 12
भारतीय संसद

- **अनु. 79 में राष्ट्रपति को संसद का अनिवार्य अंग बताया गया है क्योंकि वह संसद के सत्र को आहूत करता है, उसका स्थगन कर सकता है और लोकसभा का विघटन कर सकता है।**
- **कोई भी विधेयक, जिसे संसद के दोनों सदनों ने पारित कर दिया है, वह राष्ट्रपति की अनुमति से ही 'विधि' का रूप धारण करता है।**
- संसद से पारित हुए विधेयकों का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि, राष्ट्रपति ने उसपर अपनी सहमति न दे दी हो।
- **लोकसभा**
- **प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।** लोकसभा के गठन के संबंध में संविधान के दो अनच्छेद, यथा 81 तथा 331 में प्रावधान किया गया है।
- उपनाम –निम्न / प्रथम / लोकप्रिय / अस्थायी / जनता का / भावनाओं का सदन ।
- **अनु. 81- लोक सभा की संरचना**
- लोकसभा संसद का प्रथम अथवा निम्न सदन है । इसे **'लोकप्रिय सदन'** या निम्न सदन भी कहा जाता है क्योंकि, इसके सभी सदस्य जनता द्वारा वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं ।
- **लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं ।** लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 है **इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं ।**
- **लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 है ।** इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- (**नोट** :-2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते थे जिनका मनोनयन 104 वें सविंधान संशोधन अधिनियम 2019 द्वारा जनवरी 2020 में समाप्त कर दिया गया ।)
- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन 2026 तक बनी रहेगी।
- परिसीमन अधिनियम 1952 के अनुसार त्रिसदस्यीय परिसीमन आयोग का गठन किया जाता है । **न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह की अध्यक्षता में चौथा परिसीमन**

आयोग का गठन वर्ष 2001 में किया गया। देश में पहला परिसीमन आयोग 1952 में, दूसरा 1962 में और तीसरा ऐसा आयोग 1973 में गठित किया गया था।

- **अनु. 83-लोकसभा का कार्यकाल** अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक
- **अनु. 84-लोकसभा सदस्य की योग्यताएं**

लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:

1. वह भारत का नागरिक हो ।
2. उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो ।
3. वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
4. वह पागल / दिवालिया न हो ।

- नवगठित लोकसभा अपने अध्यक्ष (स्पीकर) तथा उपाध्यक्ष का चुनाव करती है । लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है, किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।
- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 माह से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है। क्योंकि लोकसभा की दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 माह से अधिक नहीं होना चाहिए।
- **अनु. 99 शपथ –** राष्ट्रपति द्वारा (लोक सभा के सदस्यों को)
- **लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।**
- **आपात उदघोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।**

- **<u>अधिवेशन</u>**
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए
- लोकसभा के पिछले अधिवेशन की अन्तिम बैठक की तिथि तथा आगामी अधिवेशन के प्रथम बैठक की तिथि के बीच 6 मास से अधिक का अन्तराल नहीं होना चाहिए, लेकिन यह अन्तराल 6 माह से अधिक का तब हो सकता है, जब आगामी अधिवेशन के पहले ही लोकसभा का विघटन कर दिया जाए।
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहूत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोक सभा का कार्यकाल निश्चित नहीं होता है अर्थात 5 वर्ष से पहले कभी भी भंग हो सकती है।

- **<u>विशेष अधिवेशन</u>**
- राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा को नामंजूर करने के लिए लोकसभा का विशेष अधिवेशन तब बुलाया जा सकता है।
- **जब लोकसभा के अधिवेशन में न रहने की स्थिति में कम से कम 110 सदस्य राष्ट्रपति को अधिवेशन बुलाने के लिए लिखित सूचना दें या जब अधिवेशन चल रहा हो, तब लोकसभा को इस आशय की लिखित सूचना दें।**
- **ऐसी लिखित सूचना अधिवेशन बुलाने की तिथि के 14 दिन पूर्व देनी पड़ती है।**
- ऐसी सूचना पर राष्ट्रपति या लोकसभाध्यक्ष अधिवेशन बुलाने के लिए बाध्य है।

- **लोक सभा के विशेष प्रावधान :**
- -विश्वास प्रस्ताव , अविश्वास प्रस्ताव केवल लोक सभा में ही लाये जाते हैं ।
- -धन विधेयक पहले लोक सभा में लाया जाता है ।
- -अनुदान मांगे लो. सभा में पेश की जाति हैं ।
- -मंत्री परिषद सामूहिक रूप से लो. सभा के प्रति उत्तरदायी होती है।
- -राष्ट्रीय आपात को समाप्त करने की पहल केवल लो. सभा करती है ।

- **लोकसभाध्यक्ष** - लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- अनु. 110 – कोई विधेयक धन विधेयक है या नहीं इसका निर्णय लो. सभा अध्यक्ष करता है ।
- अनु. 118 – संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लो. सभा अध्यक्ष करता है ।
- दल बदल पर निर्णय देते हैं ।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।

- **व्हिप :-** व्हिप के पद का उल्लेख ना तो भारत के संविधान में, ना ही सदन के नियमों में और ना ही संसदीय विधि में किया गया है।
- यह संसदीय सरकार की परंपराओं पर आधारित है। **प्रत्येक राजनीतिक दल का संसद में सहायक नेता के रूप में अपना व्हिप होता है।**
- **इसका उद्देश्य अपनी पार्टी के नेताओं को बड़ी संख्या में सदन में उपस्थित रखने और संबंधित मुद्दे के पक्ष या खिलाफ में पार्टी के अनुसार उनके सहयोग को सुनिश्चित करना होता है। यह संसद में सदस्यों के व्यवहार पर नजर रखता है।**
- यदि किसी दल का सदस्य व्हिप के निर्देशों का उल्लंघन करता है और पार्टी उसे यदि 15 दिन में
- क्षमा नहीं करे तो उसकी दल की सदस्यता समाप्त हो जाती है ।
- परिसीमन [Delimi]- "किसी राज्य के विभिन्न निर्वाचित मतदाताओं की संख्या में संतुलन बनाना ही परिसीमन कहलाता है।
- **1952, 63, 73, 2003. में परिसीमन किया जा चुका है।**
- **2026 तक राज्य वार लोकसभा सीटों की संख्या अपरिवर्तित रहेगी ।**
- वर्तमान में तेलंगाना की "मलकांन गिरी" सर्वाधिक मतदाताओं वाली लोकसभा सीट है।
- लक्षदीप में न्यूनतम मतदाता है।

राज्यसभा	**लोकसभा**
(1) "अनुच्छेद 19 के अनुसार राज्यसभा को नयी "अखिल भारतीय योजना के गठन का अधिकार है।	मंत्रिपरिषद् लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।
(2) अनुच्छेद 249 के अनुसार 2/3 बहुमत से किसी विषय को राष्ट्रीयता महत्वता घोषित कर सकती हैं इस स्थिति में उस पर कानून बनाने का अधिकार संसद को मिल सकता हैं	धन विधेयक, वित्त विधेयक लोकसभा में पुनः गठित के अनुसार किये जाते हैं।

संयुक्त बैठक अनुच्छेद- 108

- कोई विधेयक अधिनियम तभी बनता है जब दोनों सदनो द्वारा पारित कर दिया जाए।
- "किसी भी विधेयक का दोनों सदनों द्वारा पारित होना अनिवार्य है। (धन विधेयक को छोड़कर)
- यदि कोई विधेयक एक सदन द्वारा पारित करने के बाद दूसरे सदन द्वारा खारिज कर दिया जायें अथवा 6 माह तक रोक लिया जाये तो इस स्थिति में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलायी जा सकती है। संयुक्त बैठक में वह विधेयक साधारण बहुमत से पारित किया जा सकता है।
- संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा के अध्यक्ष द्वारा की जाती है। उसकी अनुपस्थिती में लोकसभा
- उपाध्यक्ष, राज्यसभा के सभापति अथवा किसी अन्य वरिष्ठ सदस्य द्वारा अध्यक्षता की जा सकती है।
- परन्तु उपराष्ट्रपति किसी भी स्थिति में इसकी अध्यक्षता नहीं करता

<u>संसदो की निरर्हताएँ:-</u>

- अनुच्छेद- 102 में संसदों की निरर्हता का उल्लेख हैं । इस सन्दर्भ में कोई भी मुकदमा सबसे उच्च न्यायालय में प्रस्तुत किया जाता है।
- अनुच्छेद- 103 में संसदो की निरर्हता का निर्णय राष्ट्रपति द्वारा लिया जाता है।
- अनुच्छेद- 101 यदि कोई सदस्य लगातार 60 बैठकों से अनुपस्थिति रहता हैं तो उसकी सदस्यता समाप्त कर दी जाती है।
- सुब्रह्मण्यम स्वामी की सदस्यता आपातकाल इसी के तहत समाप्त की गयी थी।
- 1954 में H.G. बुड्गतल ने रिश्वत लेने के आधार पर लोकसभा से इस्तीफा लिया था ।
- ऑपरेशन चक्रव्यूह व ऑपरेशन दुर्योधन के दौरान भी लोकसभा के सदस्यों की सदस्यता समाप्त कर दी गई थी।

<u>सांसदों के विशेषाधिकार (Act-105)</u>

- अनुच्छेद - 105 के तहत सांसदों को विशेषाधिकार प्रदान किये गये हैं । सांसदों को संसद में या उसकी बैठकों में अभिव्यक्ति की असीमित स्वतंत्रता दी गयी हैं। संसद तथा संसदीय बैठकों में कही गई कोई बात पर कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता हैं ।
- सांसदों के व्यक्तिगत आचरण पर आरोप नहीं किया जा सकता। (इसी आधार पर आर.के. करंजिया को दण्डित किया गया था)
- सत्र के 40 दिन पूर्व या 40 दिन पश्च्यात दीवानी मसलो पर सांसदों पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता ।
- सत्र के दौरान आपराधिक मसलो में भी स्पीकर की अनुमति के बगैर सांसदों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता ।

कोरम – किसी भी सदन की बैठक उस स्थिति में संचालित [अनु. 100 (iii)] की जा सकती हैं, **जब सदन की कुल संदस्य संख्या का 10% उपस्थित हों। यही कोरम है।**

- लोकसभा व राज्यपाल के नियमानुसार कोरम हेतु 1/3 सदस्यों की आवश्यकता होती है ।

=> यह मानवीय संबंधों पर बल देता है।

=> यह सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति और उनके विकास की जानकारी देता है।

=> यह उत्तम नागरिकता के विकास में सहायता प्रदान कर लोकतंत्र को सफल और सुरक्षित बनाने में सहायक है।

=> यह मानव और उसके वातावरण के बीच होने वाली अंत क्रिया का अध्ययन है।

=> यह छात्र छात्राओं को उस वातावरण को समझने और उनकी व्याख्या करने में सहायता प्रदान करता है। जिसमें वे पैदा हुए और विकसित हुए।

=> यह मानव जीवन में रहन - सहन के ढंगो, मूलभूत आवश्यकताओं क्रियाओं के ज्ञान से संबंधित हैं।

***सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य :-**

=> मानव जीवन के विकास का अध्ययन करना।

=> उत्तम नागरिकता एवं राष्ट्रीयता का विकास करना।

=> सामाजिक विज्ञान में विषयों के विभाजन की कठोरता को समाप्त करके ज्ञान की सापेक्षता पर बल दिया जाता है।

=> अच्छी आदतों एवं उचित कौशलों का विकास करना।

=> विद्यार्थियों का समाजीकरण कर सामाजिक चिंतन का विकास करना।

=> विभिन्न संस्कृतियों, रीति - रिवाजों समाज की परंपराओं के लिए रुचि, महत्व और ज्ञान विकसित करना।

*सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु :-

1. **प्राथमिक विषय :-**
   इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र

2. **द्वितियक विषय :-**
   समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र

***सामाजिक अध्ययन विषय का क्षेत्र :-**

- मानवीय संबंधों का अध्ययन
- समसामयिक घटनाएँ
- समाज संबंधी अध्ययन
- नागरिकता की शिक्षा
- ललित कलाओं का अध्ययन
- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन
- आधुनिक समस्याओं, विवादस्पद प्रश्नों का अध्ययन

अन्य विषयों के साथ सामाजिक अध्ययन का संबंध :-

(1) भाषा के साथ संबंध :-
भाषा साहित्य से संबंधित है और साहित्य का समाज के साथ घनिष्ठ संबंध होता है। निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता, इत्यादि साहित्य के स्रोत है जिसके माध्यम से समाज में विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाता है।

(2) गणित के साथ संबंध :-
इतिहास में कालक्रम को भूगोल में भौगोलिक घटना को और अर्थशास्त्र में विभिन्न आर्थिक सिद्धांतों को समझने के लिए गणित के ज्ञान आवश्यक है।

(3) कला के साथ संबंध :-
विभिन्न चित्र, मूर्तिकला, कला, इत्यादि समाज के विभिन्न राज्यों और संस्कृतियों से संबंध रखती है।

(4) प्रौद्योगिकी के साथ संबंध :-
इस वैश्विक दुनिया में हमारा समाज टीवी, रेडियो, मोबाईल Computer इत्यादि से सीधे या सामाजिक रूप से जुडा हुआ है। इन सभी का समाज पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

***सामाजिक अध्ययन की प्रकृति :-**

=> सामाजिक संबंधों का अध्ययन

=> मानवीय जीवन का अध्ययन

=> सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अध्ययन

=> सामाजिक एवं भौगोलिक वातावरण का अध्ययन

=> सामाजिक अध्ययन एकीकृत उपागम

=> क्षेत्रीय अध्ययन

अध्याय – 2

कक्षा - कक्ष की प्रक्रियाएँ क्रियाकलाप एवं विमर्श

***प्रभावी कक्षा - कक्ष प्रक्रिया :-**

=> एक प्रभावी कक्षाकक्ष प्रक्रिया के लिए आवश्यक तथ्यों एवं स्थितियों का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है -

(1) **अच्छी कक्षा** - कक्ष प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण होती है अर्थात् शिक्षण अधिगम संबंधी समस्त क्रियाओं को पूरा करने से पहले उसके विभिन्न सैद्धांतिक तथा विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण कर लिया जाता है इसके बाद ही विभिन्न क्रियाओं का आयोजन किया जाता है।

(2) **कक्षा** - कक्ष प्रक्रिया में विभिन्न गतिविधियों का निर्धारण छात्रों की योग्यता एवं उनकी रुचि को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

=> **अच्छी कक्षा** - कक्ष प्रक्रिया में प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध ढंग से पूरा होता है।

=> **कक्षा** - कक्ष प्रक्रिया में छात्रों की गतिविधियों को संपन्न करने के अधिक अवसर देने चाहिए।

शिक्षक को इन Activities को करने में आने वाली समस्याओं को दूर करने में help करना चाहिए।

=> **कक्षा** - कक्ष प्रक्रिया के मुख्यतः तीन तथ्य होते हैं -

(1) शिक्षक
(2) शिक्षार्थी और

(3) पाठ्यक्रम इन तीनों के आधार पर ही सम्पूर्ण कक्षा - कक्ष प्रक्रिया निर्धारण होता है।

=> अच्छी कक्षाकक्ष में मूल्यांकन में प्रयुक्त विधियों का विश्वसनीय एवं वैध होना आवश्यक है जिससे छात्रों की प्रगति का उचित ज्ञान शिक्षक को प्राप्त हो सके तथा वह उसमें आवश्यक सुधार कर सके।

कक्षाकक्ष के क्रियाकलाप

कक्षा- कक्ष में शिक्षक को पाठ्यवस्तु के साथ - साथ उसके संज्ञानात्मक समझ का विकास भी करना होता है इसके लिए शिक्षक को कई सारी योजनाए बनानी पड़ती है।

=> कक्षाकक्ष में शिक्षक द्वारा किये जाने वाले क्रियाकलाप :-

- ईकाई योजना
- पाठ योजना
- संक्षिप्त पाठ योजना
- सूज्य शिक्षण

ईकाई योजना

=> 1926 में हैनरी मॉरिसन ने इकाई योजना को परिभावित किया इसलिए ईकाई योजना का प्रर्वन्तर मास्सीन को माना जाता है।

=> **इकाई योजना का अर्थ :-** शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिर्वन्तर लाने के लिए शिक्षण शास्त्र के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए जो पूर्व योजनाए बनाई जाती है उसे ईकाई योजना कहते है।

=> ईकाई योजना वर्तमान समय में महत्वपूर्ण एवं आधुनिक विधि मानी जाती है।

=> हेनरी सी. मरिसन (H. C Morsion) सर्वप्रथम पाठयोजना तैयार करने के लिए इकाई विधि दी थी जो बाद में शिक्षण विधि के रूप में स्थापित हुई।

=> इकाई विधि को सर्वप्रथम हरबर्ट में जो योजना प्रस्तुत की उसे - हरबर्ट की पंचपदी कहा जाता है।

=> इकाई विधि को unit system भी कहते हैं।

=> इस विधि में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कुछ section (खण्डो) में बाटकर 'units'बना ली जाती है और प्रत्येक

Unit में उससे संबंधित उपलब्धियों का समावेश कर छात्रों को उनका अध्ययन कराया जाता है।

*इकाई योजना की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ :- (I.M)

*मारिसन के **वतानुसार** - " इकाई वातावरण संगठित विज्ञान, कला या आचरण का वह महत्वपूर्ण अंग है. जिसे सीखने के फलस्वरूप व्यक्तिगत में समाजस्य आ जाती है।"

***रिस्क के शब्दों में** - " इकाई शब्द किसी समाजस्य अथवा प्रकरण से संबंधित सीखने वाली

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/cs2iro 1 web.- https://rb.gy/gejnn0

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
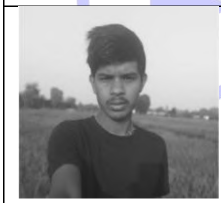	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
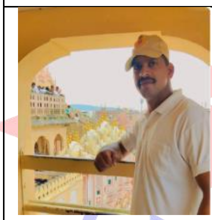	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/cs2iro

Online order करें – https://rb.gy/gejnn0

Call करें - 9887809083